

ॐ नमः ॥

ॐ नमः ॥

गनः निवावर्धुः वाचुविशः ॥ सर्वसत्त्वमहाचिह्नः सर्वप्रकिर्तनीमयः समस्त
दक्षीणगन्धर्वसमंस्तुतसावधि ॥ ॥ सर्वप्रसन्नसर्वगतः मनाहनः नर्थपदः सर्वजाना
नाथपहृष्टसहविकल्पः मनाहनकचर्नः दाकिनीहृत्काजिनाः रुचकं पवित्रगुणः
जिनगुणाः ज्ञानादायः आरुपुदः तस्यारुणकृपाः दुःखहृत्समस्तानिर्द्वयसमस्त
व्यागनादिः कानाद्वलाधियावायाः सामुनित्रकनकायाः घनकपीथिहायिजळ्वजयिः क
चुनकायाळ्वनकाया ॥ १ ॥ मय्यजकं द्रवजयिदिदिमानाहिनजळ्व ॥ २ ॥ त
रुवाजनगालः मयनापिअजनयायीः हलकालिजनपुनयाभूः ॥ द्रवजवनपुनया

ॐ नमः ॥

यि ॥ ३ ॥ चउहमकस्तुवीशीलाः कप्यनलाशनयायीः मलयजयिधनसालिजलः तहि
द्रव्याजनयाभू ॥ ४ ॥ प्रखनखनकनेकः सद्वासुद्धनमूनष्टः निनसुहन्नगचद्यवष्टः
हिरसनावर्धुमूनयि ॥ ५ ॥ आगकः नानमूनमाथः सर्ववैधविवूधमधुनाः विस्वमा
यानिष्ठुदनीः वज्रमधुतवज्रजोगानीः कानंदलासिननोचन ॥ ६ ॥ नमामीवाचुनासिदि
आगिनिः गद्यमंष्टुनारत्रस्रस्रधिसर्वसिधियानिः विस्वमायाविवदिना ॥ ७ ॥ आदितमंष्टु
वनजसमनः ॥ सुदियमावाहृत्तनारचकिर्कधुनः कधुनाचकमखनवित्तरिना ॥ ८ ॥
कवतिरपपनः मानवुदनीः मकूतकसदिगंवदाश्चद्रमानः स्वत्वाकमधुनाः थानजिक्कारय

२५ अ ३०

कया ॥ ४ ॥ तुं दैवी प्रकृति नकाः सयुन विस्रविया प्रीनार तुं रुचनने हील धलियाः त्रुडा
ध्रुव कर्तु पागम डायिया ॥ १ ॥ वाग रुचि वि ॥ गज गिन उध न हा थ ध वा याः कम न कृ नि
सत्रु ध वा नी र द म नू क न ली कृ न नः श्री शु ध न वा म ख लांग क या न त्रु ध ना ॥ ५ ॥ श्री वा स
तृ ना या वा च्चु वि तुं रु ग गु वि ना र मा न य ल चा प थि या न मा याः सा ख ल अ नु म द्रा सी न
ना ॥ १ ॥ पा णी व द्रा म द न वा म हा थ निः ध वि या उ न न श्री य मा ना र नि व लि त ला हि न
क र्तु का र वः च उ मू ख त्रु जी वी क नाल त्रु ध ना ॥ २ ॥ त्रा वि द प थाले न ड सा प थि या
नः का नि ना जी वी त मू द्रा र वि ल कृ नी स त्रु ध चं ड ज न कृ कः वा य च न म ख ड मू द्रा ३ ॥

वि ३० अ ३०

चु त्रि सं वि न वि न ख न ना य कः श्री नी च कं म हा वी न वा ना र क त्रु न ही ग ल स वि न वि न ख
नः रुं थ या स या म न सा न त्रु ध ना रुं ॥ १ ॥ वा ग न वि नः वि स य वि स य वि नः य व न रं ज कः
जा न यी चं ड वि नः ना णी क म ल र द ह यि जि न वि वू स णीः म न यि शु न कृ व निः श्री नी नू ल स
वि सः ५ ॥ म स य नः ५ ॥ न मि मं कृ धा र्मः का न च कृ हः व ज रं व न वि स त्रु र्पः प यी प ड
म रं ज कः श र व नि थ या स ह र ज्ञा न द म यः न न त्रु र्प ॥ २ ॥ व ज र प थ क स रं कृ कृ म न
न त्रु नः ना म णी गी नी त्रु च्छा रं धा न रं ज ग त द्र स ना णी नः वा धि रू व द म कः या ग ध म धि
ध ल वे हि यं ॥ ३ ॥ गु नू वा क द ध ध वा याः त्रु ध प व न कृ चि याः म नि मू ख चं ड ॥ ३ ॥ आ दि ध

विरद्वृक्षमालविनासनिदवी॥ ॥ वक्रनयनानीवृत्तमायास्वगकलनि
 कपालनिशायन॥ ॥ वाद्यचलमवस्यपत्याधरस्ववलंदादलहावाकाना
 ॥ ॥ ववनसलनली उर्गता वृक्षमात्ररुनयिभ्रमाद्यवङ्गीता ॥ ॥ ३३
 नागमात्रव॥ वज्रनिधालियाचद्युविधतालिशसिधुमीव्याधिनिर्गवृकवृ
 नाकिनि॥ ॥ नमामिष्टीयागवन्तानध्विया २ निमित्तनिर्गवृकवृ
 त्ववनपयिष्ट॥ ॥ पूर्वउर्तवपच्चिमदच्चिनदिगदवीरदाकिनिदिपी

विरद्वृक्षमालविनासनिदवी॥

निचवृक्षिकयाऊनि॥ ॥ चनुयदिगंनुक्ररुलननुक्रदवीरतिनितिति
 नाचंतीतीतवनऊननि॥ ॥ हलिहलवृक्रास्त्रेष्ट्रुगुनगहारसादहीया
 गानिसमवर्षलाव॥ ॥ ७ ॥ नागहंवि॥ नमामिश्चिन्मधनुकवन्तकःचक्रु
 मुरुनिआयिगीनार्यचक्रानयचं धनुस्त्रयाःवृद्धधनमज्ञानयस्त्रवा॥ ॥ ॥ तंन
 कंनःतंनः॥ जगतर्षसावउधयियासमाहवःनमः॥ मुरुपंचक्रिनयस्त्रवा॥ पंच
 ज्ञानपंचधनुस्त्रयाःवृद्धधनमज्ञानयस्त्रवा॥ ॥ नमामिश्चिन्मधनुकवन्तकःचक्रु

नमामिश्चिन्मधनुकवन्तकःचक्रु

बलिधि सिधिवन दायिनि रद्वित हवन सवपापपयः कवन दान पुन्य हमाक्ष
पुष्टं ॥ नमामि रधर्म धनुवा गिष्ठनः वा दहा दवा वपत्रिर्मदिना रधा दहा

नोवन नना मूनं कायाः सर्वदवपत्रिर्मदिना ॥ नमामि रवा गिष्ठर्मधु वपम

गिठिनि ववा सितार सत्व विमा हित द्रव वि वना जीनः पुष्टा मा मिठिन च फ्रुष्ट नुमा ॥

१ वा ग व संत ॥ मधु विपूनी पूयाः दूयिनी कुलालार सकव दव गन वदिन पाद ॥ ५ ॥

मेजी आदि वद्वष्टा मं कृ कृ मा या र तं नृ पि वं क्ष वि पम नृ नं ह वा ॥ ॥ कृ कृ मत्र वि

तदिव मा र संन्य गं मित्रः कवन वी सुवा ॥

॥ विरय विरय म कृ वपा वगम

न सत्त र विष्ठ विषा पितः णी गुत्र स्वयत्त ॥

॥ सत गुत्र पय मा दि वि दू ज्ञा या धर

गा वनित वगी तमन व कृ मिष्ठ ॥ ४ ॥

॥ १ वा ग ल स ॥ नी दस्त क मल वन कृ म

मयं सयगः मधु कल ह वृ वं नीना र णी वी वृपा कृ ण र्ग मूख दविः मयनि मायः

यं वा पीता ॥ ५ ॥ नमामि ने या मा त्रि रदन माः वचु या दवी णी मृग थलि र

सय वष्टा या ह व वं दित सय गः नृ नं गलि द्वि सि द्वि वन प्रसादा ॥ ॥ न दुन व

मीवचनननवः अनमक सुमपाविज्ञानवनेन नितुं गंगा ह म व ॥ सति लः
 अनमगतीर्थ सुवक्तु वल ॥ ॥ अमलैल वच सुपागीनिः अनमदवाशु व
 क्तु पाल २ अम महालय दुलित निलवा प्रक्षिः अनमति पुदिना सनि ॥
 विष्णु विष्णु पित न प्रक्षि द वीः अखय निल कन काति मय २ अलि म न सख रु
 व दायिनि द वीः अ न म क न म तु क पयि स व क्षा ॥ ७ ॥ ६०३ ॥

एतौ गल सा य न मः शी ग पु हि व म

एव स न र य पा कि ३३ ल्य य त्रिय रा य दी न व र म सा व य क य रु ६ न त्याग स द सा
 मी त वि ज न या या द य या ना य सा ॥ ६०४ ॥ सत्यार्थ विप्र मी ३ विरुं य विन न
 सा वि स्यं ७ ॥ ७ ॥ म क व प्र गु न व च स द स व य २ ॥ ॥ न म हि मं तु या सी
 संग रु नः संगृही ताः अ ह गो वाः अ या यि क वाः स ही त गा वाः
 पि ना वाः संगी ना वाः अ सुं गी ना वाः न र सुं गी ना वाः
 या म हा मू द्या न ह प र य नि ल य यि त वा ॥



सुप्रतिमं शुभाः शिला ॥ कृताज्ञानमीदं ननु प्रित्तवन्नन प्राणिना मिश्रना ॥ १ ॥
चक्रं वृत्तिना नृपान विषयानाज्ञानिनः कदाप्य ॥ २ ॥ नृपाज्ञानचूर्ध्वमेता
मर्कतयाः स मधुलयायि मर ॥ ३ ॥ विष्णुमंथुनचक्रमाः कलयन्ते चेत
किमुक्तामृतिर ॥ ४ ॥ हा जलं नृपा शिला ॥ चंद्रालिकवलीलयाजिज्ञप
या इल्ललितो विष्णुत्तविष्णुत्तलिमहाशुखं दिवचलः लीनसा वा ल्म दयः नृ
हाजाग्रः मनायिनृवृत्तिपदः प्राफापिधल्लययाः दामदाग्रवृदयद्वयचस

हजायनन्यायचन्दामह ॥ ० ॥ निरुत्तवया शिला ॥ मेलेमंथुनविष्णव
जः कलितः पिता र्द्धकृष्णननः नेवात्मा पवित्रकाः माहमृदिनं श्रु लुणीवकि
पुत्रः मृत्युः कृष्णगविलदेवतनया कान्धु पुष्टवालये सनं मधुनचक्रना
यः महहवजनाथ ॥ ० ॥

१ अक्षिव न कृन्ः या न गृहः
का पाः नदि नमस्काः विष्णुसन्ः
अनिनः
न कृन्
नमस्
गो वहु
गो हन्ता

१ सानि कृन्
नदि नमस्का
विष्णुसन्
अनिन
न कृन्
नमस्
गो वहुः
अन विव आधस
न कृन्
वा सा दहिः स गार्ध
सा ता रुमे
व न न सु दानि
व हु कृन्ः का सयं
ह पा न मदिः
नि न रिव
का हं से व सा

अक्ष कृन्
नदि नमस्का
अनिन
अन नः नि नि सायं
न कृन्
नमस्
गो वहु

कसि न व जानः आ क वि य माः
का ना हंः सा ता रुन्ः सान कृन्
१ अक्ष कृन् नदि कृन् या नः य जा वे
नदि नमस्का विष्णुसन् विष्णुसन्
न न सिनः
नमस्दि म ह
नमस्ः आ वे
विष्णुसन्ः य जा मान काः

विष्णुसन् कृन्ः सान नमस्का
विष्णुसन्
अनिन
अन नः नि नि साय
न कृन्
नमस्
गो वहुः

शक्तिरद्वयानलः
को नाहं
सर्ववृषः
कीकाम्यवशात्मानकातिशयम्
शक्तिनिः शक्तिशक्त्याम् ।

१ का नाष्टः सर्ववृधः थनरा सः हातातुलंः आदिमात्रका गित मात्रकाः थनिप्र
 द्धकृत्तुयातः ॥ ॥ थनरा ना कृत्तु गच्छुसः नद्युनमस्कावः गितवीधसला नूरुः ॥ ० ॥
 १ वागर्गधा नष्टवविः रुवागियमकृतकिलटिमनिलछुवः चवननक्षर्ग ५ ॥ साहिय
 कजसत्तः पनम्यछलः पनमपदं ॥ २ ॥ गधसुनिवदुपिथकथंरुटदहधवं ॥ ३ ॥
 चवित्तनरुवक्षसुः चावित्तुयाकटकमयक्षर्ग ॥ ४ ॥ १ थनगमच्छुदुनः पाठपूजाः थनन
 तं ५ ॥ १ वागर्गधा नष्टवविः ननमहिर्मधुममयक्षमूयाश्चनधनगाहनउदुकविम्वचं द्या ३

१ वागर्गधा नष्टवविः ननमहिर्मधुममयक्षमूयाश्चनधनगाहनउदुकविम्वचं द्या ३

॥ ५ ॥ पखलम्रनुमियः लायनगयन्य २ कूलपविहासयिः जिनगुनलयन ॥ २ ॥
 कथयथालिच्छुदियाः विखययका २ हा मूदुतवंगक्तिः ननकृन्नयका ॥ ३ ॥ १ वनदुय
 रुदीयाः दुधविचरीया २ कालयिवर्जनलः दहदीयाह ॥ ४ ॥ छगतलदीलवेयाः न
 सोल्लसाध २ सुवनवर्जनयिः अविष्टाजयनर्ग ॥ ५ ॥ १ थनमध्यमयुः नितानाः
 तिः ग्वकृत्तुः खनगागिनिः ॥ ० ॥ १ वागवलिनः मरुपय पातसमयाचालित्वधन २
 दहादिगदहावयः भालाधियालः समयानुदुल्लतिहा ॥ ५ ॥ विचवीलछववयि
 धनः मधुमभाहनीवीधरुलिय २ नृकायावविद्यानदवीः यानपविलविधु

१ वागर्गधा नष्टवविः ननमहिर्मधुममयक्षमूयाश्चनधनगाहनउदुकविम्वचं द्या ३

१ वागर्गधा नष्टवविः ननमहिर्मधुममयक्षमूयाश्चनधनगाहनउदुकविम्वचं द्या ३

